

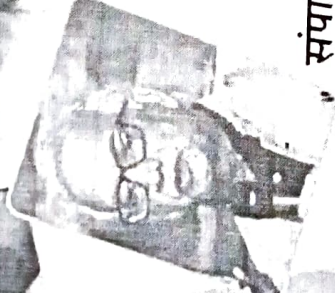
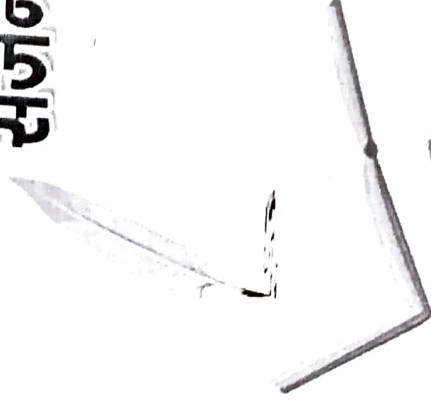


डॉ. नीतू परिहार
सह आचार्य एवं विभागाध्यक्ष,
हिन्दी-विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
मो. नं. : 9413864055
Email : neetuparihar11@gmail.com

लेखक परिचय

नाम : डॉ. नीतू परिहार
जन्म : 26 नवम्बर, 1974
शिक्षा : पीएच.डी., एम. ए (हिंदी, संस्कृत)
संप्रति : सह आचार्य एवं विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)
प्रकाशन : समकालीन हिंदी कविता का काव्यशास्त्र-2002, हिंदी नाट्य साहित्य और रंगमंच-2015, वागड़ का लोक साहित्य, (ई-पुस्तक)-2021, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में साहित्य, संस्कृति और समाज विषयक शोध आलेख, समीक्षाएँ, समकालीन कविता पर शोध। वर्तमान में आप शिक्षा मंत्रालय के राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान प्रोजेक्ट 'वागड़ का लोक साहित्य' के सह अन्वेषक हैं।
अनुभव : गत 18 वर्षों से अध्यापन, शोध एवं शोध निर्देशन।

हिन्दी के समकालीन कवि सर्जना के आयाम



संपादक

डॉ. नीतू परिहार

हिन्दी के समकालीन कवि: सर्जना के आयाम सं. डॉ. नीतू परिहार



प्रकाशन

₹ : 500.00

हिंदी के समकालीन कवि : सर्जना के आयाम
समीक्षात्मक आलेख

संपादक
नीनु परिहार



आमुख

मुझे चुन्दे की आग-सी धधकती कविताएँ चाहिए
खेलों में कानियों-सी झलझली कविताएँ चाहिए
मुझे योद्धावत के रूप में चुली कविताएँ चाहिए
भीली गिराहरी-सी फुदकती कविताएँ चाहिए

— प्रविण्ड कविचन्द्र

हिंदी के समकालीन कवि : सर्जना के आयाम
समीक्षात्मक आलेख

ISBN : 978-81-86064-88-7

© : लेखक

मूल्य : दो 2777

संस्करण : 2022

प्रकाशक : अंकुर प्रकाशन

1/1 कोजी का हवाटा, गायत्री मार्ग

इंदरपुर (राज.) 313001

फोन नं. : (0294) 2417094, 2417039

(मो.) 9413528299

ईमेल : ankurprakashan15@gmail.com

आयाम : एन.सी.आई., इंदरपुर

टाईपसेटिंग : देवेन्द्र कामराज, दिल्ली

मुद्रक : अर्जुन डिजिटल प्रेस, दिल्ली

Hindi Ke Samkaleen Kavi : Sarjana Ke Ayam

Sangadhi By : Neenu Parihar

₹. 00

कविताएँ सच ही मेरे आदर्शजनक बन के रहती हैं। जब भी कोई चुनक, चिक्का लय में आने लगे तो पहले तब कविता की ही खोजनी है। कविताओं को मैं पढ़ाने विषय जो पढ़ जानें हैं, फिर कविताओं का क्या मतलब के साथ ही समझ आता है। वह मुझे ज्यादा अच्छे लगती हैं। कविता हिंदी साहित्य में कई पहलुओं पर बन आते भी मिलते पर मिलते हैं।

पहले-पहले कविताएँ हास्यमय और चुक में लिखी जाती रहीं, पर समकालीन की एनी रचनाएँ बनती रहीं। धीरे धीरे परम्परागत कल्पनों को छोड़कर कविताएँ धुंधल धुंधल में बनने लगने लगीं। आज आधुनिक समय में भी कविताएँ अपने पार कल्प और कल्पना के साथ साहित्य में उपस्थित हैं। आज की कविताएँ अपने समय की गायत्री हैं। अपने कोई विषय ऐसा नहीं जिस पर काल न बने सको हो। आधुनिक कविताओं में विरले रूप ही एक विषय नहीं है कल्पना आदर्शवाद, परकीर्ण, प्रत्यक्ष, पठने जगत्, स्वयं, परिचय, प्रकृत, यज्ञाचार्य, मनी-सोपान, राजनीति, परकीर, रिश्ते आदि अनेकों विषय हैं जो कविताओं में अपना स्थान बना रहे हैं।

आज की कविता अपने अक्षरगत चरित को ही पढ़नेओं को अपने में

अनुक्रम

क्र.सं.	शीर्षक/लेखक	पृ. संख्या
1	विश्वास के दीये-सौ टिमटिमाती : वतिका नन्दा— नाम दें	13
2	अनुज लुगुन की कविताओं में आदिवासी जीवन— डॉ० नवीन नन्दावा	22
3	आखर अनन्त और जीवन में आस्था के कवि : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी— डॉ० प्रीति भट्ट	33
4	धूमिल : स्वातन्त्र्योत्तर कविता के उज्ज्वल 'मोची राम'— डॉ० महेश चन्द्र तिवारी	42
5	पवन करण की कविताओं में प्रतिबिम्बित नारी— डॉ० नीता त्रिवेदी	50
6	ममता कालिया की कविताओं में स्त्री-संघर्ष की गूँज— डॉ० उषा शर्मा	64
7	मंगलेश डबराल की कविताओं का सामाजिक स्वर— डॉ० ममता पानेरी	71
8	विजयदेव नारायण साही : सरल धरती का अभिलाषी कवि— डॉ० कैलाश गहलोत	77
9	अनामिका के काव्य में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति— एकता देवी	86
10	समकालीन बोध और धूमिल की कविता— विद्याप्रभाकर डॉ० कनुप्रिया प्रचंडिया	94